COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
ISSN: 0976-5301
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (July-December)
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
PP: 237-242
Journal Website www.coherencejournal.in

एनमकजेमे निहित स्वर्गक अवधारणा

डॉ. नवल किशोर महतो

पूर्व शोधार्थी

मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्‌वविद्यालय, कामेश्‌वरनगर, दरभंगा

सार-संक्षेप–

“मानव समुदायक उद्येश्य कमोबेस इएह होइत अछि जे हम दोसरासँ सुसंस्कृत बनब आ मरलाक बाद नरक नहि स्वर्गमे जगह भेटय, मुदा देखबामे इएह अवैछ जे मानव, नेनाक रूपेँ नांगट जन्म लैत छैक आ मरलाक बाद पंचतत्वमे विलीन भऽ जाइत छैक। ओ स्वर्ग आ नरक कतय जातइ छैक, ई मात्र मनक अवधारणा अछि। एनमकजेमे अंबिकासुतन मांगाड इएह रहस्यकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास कयलनि जे प्रकृतिक बनायल प्रत्येक जीव बहुमूल्य अछि। प्रकृति स्वयं सभक बीच संतुलन स्थापित करैत अछि। मुदा मानव सुसंस्कृत आ स्वर्गक लालसामे प्राकृतिक संतुलनकेँ बिगारैत अछि जकर दुष्परिणाम भ्रामक होइत छैक।“

प्रस्तावना–

एनमकजेक मुख्य पात्र नीलकंठन, जकर माय-बाप सुसंस्कृत बनैबाक प्रयास करैत छैक। मुदा नीलकंठन प्रकृतिक अनुसार जीबऽ चाहैत छल। ओ फतिंगा आ तितलीक पाँछा भागैत अपन बाट भटकि जाएछ। ओकरा बसात आ गाछ-वृक्षक स्पर्श करब, बरखाक भाषा बाजब, खिलैत फूलक देखब, नीक लगैत छल। जखन ओ किताब खोलैत छल तँ ओकरा किताबमे मजूरक दयनीय दृष्य आ ओकर नांगट नेना सभक आकुल, कल्हायत कारूणिक चित्कार सुनाईत छल। ओ अपन माय-बापक सेहो नहि चिन्ह पाबैत छल। चोतखीक सलाहपर नीलकंठनक सुधरबाक लेल महायज्ञ कयल गेल। मुदा नीलकंठन जनेउ तोड़ि होमकुंडमे फेँक-फाँकि अपन गाम छोड़ि मोह-मायासँ मुक्त भऽ जाइत अछि। नीलकंठन स्वच्छन्द जीवन जीबैत दैनिक ‘लास्ट लाइन’क भेँडरसँ लऽ कऽ उपसम्पादक धरिक सफर तय करैत अछि। नीलकंठन अपन घऽरमे खिड़की आ दरबज्जा नहि राखैत छल, जकरा संदर्भमे ओकर कहब छैक- “घऽर मनुक्खक निजी विश्रामस्थल थीक। दुनियाक बाहर करबाक काज दरबज्जे आ खिड़की करैत अछि।“ परिणामस्वरूप नीलकंठनक घऽर जरूरतमंदक लेल आश्रयस्थल बनि गेल। बियाहक संदर्भमे नीलकंठनक सोच छल जे- “पुरूखक आगाँ स्त्रीक आजादी आ जिनगीक समर्पणक प्रक्रियाक नाम थीक बियाह।“[1]

नीलकंठन परित्यक्त देवयानीकेँ बिन बियाह अपन संगी बनैबासँ पहिने स्पष्ट कऽ दैति छैक- “हम भोजन आ शरीर साझि कऽ जीबि सकै छी, तोरा पर पतिक कोनो अधिकार नहि जतैबौ। तोँ जे कोनो काज कर’ चाहबेँ कऽ सकैत छेँ, तोँ रण्डी बन’ चाहबेँ तऽ बन्हियेँ। हमर जाति, उमिर, भूत किछु हमरा दुनूक संग रहबामे बाधक नहि बनत। हम दुनू संग जीअब बस एतबहि।“[2]

© Copyright @ Authors

देवयानी आ नीलकंठनकँ मनुष्यक सेवा करैत एहि संसारसँ मोह भंग भ' जाइत छैक। ओ अपन पहचान छोड़ि स्वर्गक खोजमे एनमकजे पहुँचैत छैक। 'एनमकजे' एकटा पहाड़ी गाम थीक। एगो दूगो नहि लाखो पहाड़ी एकक बगलमे एक। 'एनमकजे' भाषा सभक गाम थीक। एतय लोक तुलु, कोंकणी, मराठी, ब्यारी, अरबी, उर्दू, कन्नड़ आ मलयालम बजैत छल। एक व्यक्ति चारि पाँच भाषामे गप करैत छैक।

'एनमकजे' सत्यक गाम थीक। एक एहन प्रदेश जतय झूठक नामोनिशान नहि छैक। तैयमक कहब छनि... "हम सत्यक देवता छी। तोँ सभ सत्यक पालन कयनिहार लोक। एही भूमिपर सत्यक छोड़ि झूठ नहि बाजि सकैत छी। ओकरा बढ़' नहि देल जायत। विश्वास राखी सत्य पर।"[3]

'एनमकजे'मे अनेको साकोजाल अथवा सत्यपदी छै, जाहिमे सत्यक सोलह सोपान होइ छै, ओहिपर चढ़ि सत्ये बाजबाक होइ छै। जँ केओ असत्य बाजै छैक तऽ ओकर जीवनलीला तत्क्षण समाप्त भऽ जाय छैक। ई 'एनमकजे'क पौराणिक मान्यता छैक।

ई कोनो काल्पनिक गाम नहि थीक। अहाँ ओतय बस सँ जा सकै छी। जखन अहाँ ओतय पहुँचब तऽ हरियर बस चलैत भेटत। पहाड़ी जंगल आ झरना देखायत। अहाँ एकटा चौराहा पर पहुँचब तऽ ओतय एगो चेकपोस्ट छै। ओहिठाम सड़क पर एकटा पैघ हरियर बोर्डपर उज्जर (सफेद) आखरमे लिखल भेटत---"एनमकजे मे अपनेक स्वागत अछि।"

अहाँ एनमकजे मे प्रवेश करू। पहाड़, नदी आ नालासँ परिपूर्ण प्रदेश, एकटा एहन प्रदेश जतय खेत सभमे सदिखन उज्जर पताका फहराइत छैक। पहाड़क ऊँचाई परसँ बस जखन समतल भूमिपर पहुँचै छै तखन शोर होइछै- "स्वर्ग, स्वर्ग आबिगेल– स्वर्ग, आबिगेल"। एक प्रदेशक नाम छै 'स्वर्ग'।

एनमकजे पहिने वास्तवमे स्वर्ग छल, ओ राजा महाबलीक गाम थीक। ऐहन किवदन्ती अछि जे भगवान विष्णु वामनक रूप धरि बलिसँ दानमे तीन डेग जमीन माँगलनि। दानी बलिक स्वीकारपर ओ एक डेगमे सम्पूर्ण पृथ्वी, दोसर डेगमे स्वर्ग नापलनि, तेसर डेगक लेल जखन किछु नहि बचल तऽ दानी बलि अपना सिर आगाँ कऽ देलनि। राज्यसँ बेदखल बलि भगवानसँ आग्रह कएलनि जे हुनका प्रजाक हालचाल जनबाक लेल प्रत्येक वर्ष अपन गाम अयबाक आज्ञा देल जाय। ऐहन किवदन्ति अछि जे महाबलि प्रत्येक वर्ष कार्तिक माहमे आमावस्याक राति अपन प्रजाक देखबाक लेल एखनो अबैत छैक।

स्वर्गक संदर्भमे हरेक धर्म, दर्शन आ संस्कृतिमे ई चर्चा अवश्य भेल अछि जे स्वर्ग की थीक? मरलाक बाद लोक कतय जाइत अछि? वैदिक आ हिन्दू धर्मक अनुसारें स्वर्ग देवराज इन्द्रक निवास थीक जतय कल्पवृक्ष, अप्सरा, अमृत आ दुखक कोनो नामोनिशान नहि होइछ। स्वर्ग पुण्य, यज्ञ, दान आ नीक कर्मसँ भेटैत अछि। ई अस्थायी होइत अछि, जे पुण्यक समाप्तिक संग समाप्त भऽ जाइत अछि आ फेरसँ जन्म लेबाक पड़ैत अछि। बौद्ध धर्मक अनुसारें स्वर्ग-वर्ग किछु नहि होइछ, नीक कर्मसँ देवलोकमे जन्म होइत अछि, जे दुःख आ परिवर्तनसँ भरल अछि। जीवनक लक्ष्य अछि निर्वाण। जैन धर्ममे स्वर्गकेँ ऊर्ध्व लोक कहल गेल अछि। पुण्यात्मा देव बनैत अछि आ फेरसँ नीचाँ आबैत अछि। इस्लाममे सात प्रकारक जन्नत(स्वर्ग)क वर्णन अछि। जतय दूध आ शहदक नहैरि, सुकून, अल्लाहकेँ दीदार

© Copyright @ Authors

होइत अछि। जन्नत नीक आमाल आ ईमानसँ भेटैत अछि, जे स्थायी होइत अछि। ईसाई धर्ममे परमेश्वरक राज्य कहल गेल अछि। जे पापसँ मुक्त आ यीशुमे विश्वाससँ भेटैत अछि। एहिठाम लोक शांतिमय जीवन ईश्वरक संग सदाक लेल जीबैत अछि।

मुदा एनमकजेमे अंबिकासुतन मांगाड इएह रहस्यकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास कएलनि जे एनमकजे कहियो स्वर्ग छल, एखन नर्क बनि गेल एकरो कारण मनुष्ये थीक। एकर मुख्य कारण अछि काजूक खेती– "काजूक गाछमे फूल लागै छैक तखन ओहि पर टिमोस्टीन नामकेँ कीड़ा लागि जाइत छैक। ओहिसँ काजूक फूल कम भऽ जाइत छैक। तेँ हर साल कीड़ा मरबाक लेल एण्डोसल्फान छिटल जाइत छैक। ई क्षेत्र सरकारक अधीन प्लांटेशन कॉरपोरेशनमे शामिल छैक। सरकारी स्थान पर सरकारे द्वारा स्प्रे कयल जाइत अछि, सरकार पर हम सभ की कऽ सकै छियै?"

नीलकंठन आ देवयानी स्वर्ग(एनमकजे)मे पहुँचि ओहि भूमिक कोनो एहन जगहमे रहबाक लेल चलि गेल, जतय एक्को मनुख नहि रहैत छल। मात्र गाछ-बिरीछ लगायल जा सकैत छलै आ माल-जाल पोसल जा सकैत छलै। एहने जगह खोजि ओकरा दूनूकेँ एनमकजे गाम धरि खींचि आनने छलै। स्वर्गमे ओहि दूनूक सामना ओहि जानवर, पेड़-पौधा, मरल मधुमाछी तितली, पानि आ माटिक एकटा समूहसँ भेलै जे एन्डोसल्फान बीसक शिकार भेल छलै। मलयाली पाठक जानैत छथि जे ई कल्पना नहि अपितु यथार्थ छैक। दीर्घ संघर्ष, सार्वजनिक स्वास्थ्य आन्दोलन आ पर्यावरण कार्यकर्ता सभक हस्तक्षेपक कारण केरल एन्डोसल्फान आपदा भूमिक रूपमे बहुत दिनसँ सक्रिय छल। टेलिविजनपर तस्वीरमे आ फीचरमे एकरा देखिकऽ कर्तव्यनिष्ठ लोकसभ बड़ परेशान छथि। एहि वास्तविकताकेँ उपन्यासमे समावेश करब बड़ श्रमसाध्य काज थीक। वास्तवमे लेखनक लेल ई एकटा पैघ चुनौती थीक। अम्बिकासुतनक ई उपन्यास एनमकजेक विलाप(चीख)पर आधारित थीक। उपन्यासकार उल्लेख कएने छथि जे एहिमे दू-हजार ई.सँ पूर्वक एनमकजे गामक इतिहास आ संस्कृतिकेँ सावधानी पूर्वक रेखांकित कएल गेल अछि। अनेक हृदयस्पर्शी संदर्भ केँ पढ़लाक बाद पाठक घटनासँ आभिभूत भऽ जाइत छथि। बिनु कोनो गलतीक पीढ़ी दर पीढ़ीक विनाशपर तामस संघर्षमे कोना बदलि जाइत छैक तकर वर्णन एहिमे अछि। द्रष्टव्य अछि उपन्यासक अंश-

"जयराजन् फेर बाजल- हम सत्य कहै छी। एडोसल्फानक सम्बन्धमे रिपोर्ट अइलै हन से हमरा लऽग अछि। जँ कहबै तऽ हम देखा देब। एहिमेसँ एगो अमेरिकासँ प्रकाशित रिपोर्ट छै। ओहीमे भेड़ीक दूधक जाँच कयलापर ओकर क्रीममे विष भैटलै हन। ओ सल्फेट रूपमे छलै। ओ एंडोसल्फानोसँ बेसी मारक छै। पेसाबोमे एंडोसल्फान छै। गायक दूधोमे एंडोसल्फान छै। दूधेमे नहि माछ, मास, अंडा आ तरकारी आदि खाद्य पदार्थ सभमे सेहो ई विष पायल गेलै हन।"[4]

परीक्षितक निश्चल देह दिस इशारा करैत डॉक्टरक कहल शब्द शासक वर्गक प्रति मानवीय विवेकक प्रश्न थीक।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

चिकित्सीय साक्ष्य सदिखन सबसँ महत्वपूर्ण होइत अछि--- “की अहाँ एक बरखक नेनाक आकारक आठ बरखक बालककेँ देखलहुँ अछि? माथक सभ केश पाकल आ फोड़ा-फुंसीसँ भरल देह। एकर अतिरिक्त एहिसँ बढ़िकेँ आरकी प्रमाण चाही?

उपन्यासमे आर अनगिनत साक्ष्य सभ थीक। शिवप्पा नायकक चौदह वर्षीय बेटी भाग्यलक्ष्मी ओ अपन पैघ जीह बाहर निकालने ठाढ़ अछि। ओकर लाल फुलल जीह ठोरक नीचा धरि लटकल छै।

नारायण शेट्टीक बेटी जमीनपर बिछायल पोआरपर औंघरायल छल- जकर माथ ओकर शरीरसँ पैघ आ हाथ पयर बहुत छोट छलै। तुमन्ना शेट्टीक घरमे दूटा बच्चा, दूनू जंजीरसँ बान्हल छैक।

छब्बीस सालक अनवर बारह सालक नेना नाहित बैठल अछि, ओकर छौड़ी नम्मा आ लत्ती नाहित मोड़ल-सोड़ल छैक। ओकरा आँखिमे पुतली (कृष्णमणी) नहि छैक।

एकहि नजरिमे अभिलाषा, बानर सन छोट माथ, आगू दिस चेहरा, छोट-छोट धंसल आँखि आ ताम्बा सन केशसँ झाँपल दुब्बर पातर अंगक कारण बानर सन देखाय छैक।

एहन अनगिणत प्रमाण केवल इंसानेमे नहि आनो जीव-जन्तुक बच्चामे तीन पयरक संग जन्म लैत अछि। मधुमाछी, माछ, बेंग, साँप आदि झुण्डक-झुण्ड मरि रहल अछि। केरल सरकारक कृषि विभागक वृक्षारोपण नियम द्वारा ‘एनमकजे’मे एंडोसल्फानक छिड़काब कयल जा रहल अछि।

एण्डोसल्फान विष नहि दवा छै। विभागक मंत्रीक ई जवाब-‘जे जँ कोनो बेमारी छै तऽ कोनो नीक डॉक्टरक सलाह लेबक चाही आ इलाज करबाबक चाही। ई भ्रम एनमकजेक लोककेँ एक लोकप्रिय संघर्षमे लऽ जाइत छै। एस्पाक (एंडोसल्फान स्प्रे प्रोटेष्ट एक्शन कमिटी)क गठन एहि विश्वासक संग भेल छलै जे अधिकारी आ मंत्री एंडोसल्फान कंम्पनीक संग ठाढ़ हेतै। एकर विकास आ कार्यकलाप उपन्यासमे बड़ स्वाभाविक रूपसँ स्पष्ट भेल अछि। द्रष्टव्य अछि उपन्यासक अंश-

“मंत्री गोसा गेलै। ओ कहलकै- मंत्रीक घेराउ करबाक अधिकार तोरा के देलकौ। एंडोसल्फान विष नहि, दवाई छै। बेमारी छै तऽ नीक डागदरसँ देखा। लऽ जोँ एहि बच्चा सभकेँ... नालायक कहाँक।”[5]

बादमे केरलक इतिहासमे हम देखैत छी जे ऐहन आपदा ने कहियो देखल छल आ ने सुनले गेल छल, ओ सभ जटाधारी भूतक कोपक कारण भ’ रहल छै। एही विश्वासक संग जीबैत, गरीब लोकक बीच किछु लोक ज्ञानक प्रकाश संग अयला जे हम एहि सब संकटकेँ खतम कऽ देब। मुदा हुनके सभक कुकृत्यक परिणामस्वरूप ओ सभ एनमकजेमे फेर दोहरायल। कीटनाशक विरोधी अभियानसँ जुड़ल व्यक्ति, संगठन आ मीडियाक संयुक्त प्रयासक परिणमस्वरूप एंडोसल्फानपर प्रतिबन्ध लगा देल गेल। हमरा बुझाइत अछि जे मलयालम साहित्य एहिसँ पूर्व एहन उपन्याससँ परिचित नहि होयत, जाहिमे एतेक अनुभव आ कल्पनाक एतेक समावेश भेल होयत।

हम पूर्ण विश्वासक संग कहि सकैत छी जे पर्यावरण जागरूकतापर एखन धरिक प्रकाशित सामग्री सभ मात्र ओकर आहेमाहे छल। एहि विषयपर इएह एकटा पुखता स्तरीय कृति थीक। लिखब तखनहि सार्थक

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

होइत अछि जखन लेखकक हृदयसँ निकलल भाव (पुकार) पाठक धरि पहुँचैत अछि। पाठकसँ सरलता पूर्वक संवाद करऽ बला मलयालम साहित्यक ई पहिल गंभीर उपन्यास थीक।

अनुवादक काज बेस दुरूह होइत अछि। अनुवादकक लेल स्रोत भाषा आ लक्ष्य भाषा, दुनूक नीक ज्ञान आवश्यक अछि। संगहि एहि काजमे अनेक तरहक खतरा मूल रचनाकार आ लक्ष्य भाषाक पाठक दिससँ सदिखन बनल रहैत छैक।

अनुवादक कैँ अपन पहिल अधिकारी मूल रचनाकारक प्रति ओतबे सचेत रहबाक होइत छैक जतेक लक्ष्य भाषाक पाठकक प्रति। अनुवादक अनुवाद करए काल सदिखन चिंतित रहैत अछि जे मूल रचनाक भाव-भंगिमा, संस्कार-व्यवहार आ भाषाकैँ लक्ष्य भाषामे हुबहु अभिव्यक्त कऽ सकए। एहिमे कनेको कमी मूल रचनाकारक प्रति नाइंसाफी होएत, लक्ष्य भाषा पाठकक प्रति बेइमानी आ स्वयं अनुवादकक अनुवाद दक्षताक दोष मानल जाइत छैक। एतबे नहि एहिमे कमीसँ अनुवाद कार्य अपन उद्देश्यक पूर्तिसँ कोसो दूर भऽ जाइत छैक आ सभटा दोष अनुवादकक माथ मढ़ाइत छै। एकर संवभावना तखन आर बेसी होइत छैक जखन अनुवादसँ अनुवाद होइत अछि। किएक तऽ मूलसँ अनुवाद होइत काल यदि अनुवादकसँ एकहुटा चूक भऽ जाइत छैक आ ओहिसँ जँ पुनः अनुवाद होइत छैक तँ ओ चूक तऽ रहिते अछि, आर आनो चूकक संभावना बढ़ि जाइत अछि। एहिसभ उपर्युक्त शंकाकैँ ध्यानमे राखि कुशल अनुवादक हमेशा मूल भाषाक पोथीसँ अनुवाद करैत छथि।

अनूदित पोथी 'एनमकजे'क अनुवादक डॉ. रामनारायण सिंह सभ दृष्टिकोणसँ उत्कृष्ट छथि। मूल रचनाकार अम्बिकासुतनक भाव-भंगिमा एहि अनूदित पोथीमे कनेको झूस नहि भेल अछि। पूर्ण विश्वास अछि जे मैथिली भाषाक पाठक लोकनि अपन मूल भाषामे ई उपन्यास पढ़ि मूल एनमकजेक विशिष्टतासँ परिचित भऽ आनन्दित हेताह। स्वर्ग आ नरक मनक अवधारणा अछि। प्रकृतिक गड़हल प्रत्येक वस्तु उत्कृष्ट होइत अछि, ओहिसँ छेड़-छाड़ मानव समुदायक लेल अहितकर होयत अछि। एनमकजे स्वर्ग, सत्य आ महाबलीक गाम थीक, मुदा काजुक अत्यधिक लालसा ओकरा नर्क बनय देलक। एकहि एनमकजेक दूटा रूप देखि स्वर्गक मूल अवधारणा स्पष्ट रूपैँ देखार होइत अछि। अंबिकासुतन मांगाड इएह रहस्यकैँ स्पष्ट करबाक प्रयास कएलनि जे प्रकृतिक निर्माण स्वर्गक अवधारणा अछि। एहिसँ छेड़-छाड़ नर्कक द्वार खोलैत अछि। ज्ञानी मनुष्य जखन प्रकृतिक रहस्य बुझि जाएछ तखन ओ मोह-मायाक जालसँ मुक्त भऽ प्रकृतिक दिश आकृष्ट होइत छैक। गौतम बुद्ध, भगवान महावीर आदि शंकराचार्य प्रकृतिक रहस्यकैँ बुझि, प्रकृतिक अनुकूल जीबाक शिक्षा देलनि। महाभारत युद्धमे पाण्डव द्वारा जितल सिंहासन, राजदण्ड आ मुकुटकैँ त्यागि कुन्ती आन्हर वयोवृद्ध दम्पतीक संग वनवासक लेल तैयार भ' गेलीह। कुन्ती अपन शेष जीवन ओहि दूनू जीवकैँ सेवा करैत मानवलोकसँ स्वर्ग सिधारि गेलीह। पाण्डव कठिन विसादमे पड़ि गेलाह। ऋषि विदुर जे बेर-बेर युद्ध नहि करबाक लेल कहैत छलाह, ओहो जंगलमे चलि गेलाह। बेर-बेर ज्ञानी जंगलमे चलि जाइत छथि। वेदव्यास जंगलमे गाछ तऽर नाँगट(दिगम्बर जकाँ) ठाढ़ वृद्ध ज्ञानी व्यक्तिकैँ देखाकऽ कथा समाप्त कैलनि। तहिना देवयानी आ नीलकंठन स्वर्गक रहस्य बुझि प्रकृतिक दिश आकृष्ट भेलाह। मुदा प्रकृतिकैँ प्राकृत स्वरूप स्वीकार्य

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

छैक, कृत्रिम स्वरूप नहि। तेँ गुफा कहलकै– “जँ तोरा आश्रय चाही तs भीतर आबि सकै छैं मुदा डॉरमे जे जीर्ण-शीर्ण आवरण वेष्टित छौ' ओकरा उतारिकेँ फेँकि देबाक हेतौ।“[6]

ई सुनितहि दूनू अपन-अपन वस्त्र उतारिकेँ नहरिमे फेँकि देलक। एकदम नांगट भ' गेल। तब गुफा प्रेम पूर्वक कहलकै –“आबिजो”

एहि भरत वाक्यसँ अंबिकासुतन् मांगाडक ‘एनमकजे’ समाप्त होइत अछि। आदिम मनुख गुफावासी छल, ओ गुफासँ सभ्यता दिस बढ़ल। फेर किएक ओ गुफामे वापस भेल? एहि प्रश्नक उत्तर थिक ‘एनमकजे’।

साहित्यकार डॉ. रामनारायण सिंह कुशल अनुवादक छथि। हिनक कैकटा अनुदित पोथी अनेक भाषामे प्रकाशित छनि। अनूदित पोथी मलाहिनक लेल हिनका वर्ष 2014ई.मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटि चुकल छनि। पेशासँ डॉ. रामनारायण सिंह उच्चमाध्यमिक विद्यालयक अवकाश प्राप्त संस्कृत शिक्षक छथि। हिनका संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मैथिली ओ मलयालम भाषापर समान अधिकार प्राप्त छनि। हिनक मैथिली साहित्यमे तीनटा पोथी ‘मलाहिन’, ‘श्री नारायणगुरू’ आ ‘एनमकजे’ मलयालमसँ मैथिलीमे अनूदित आ प्रकाशित छनि। हिनकासँ आशा करैत छी जे भविष्यमे आर आनो-आन विधामे पोथी पढ़बाक अवसर देताह।

अनुवादक अनेको मलयाली शब्दक अर्थ मैथिली भाषामे सरल रूपेँ बुझौलनि अछि। द्रष्टव्य अछि उपन्यासमे प्रयुक्त मलयाली शब्द---

नक्कर/कोरुगु/पेरला-जगली पौधा।

साकिजाल-सत्यक सीढ़ी।

कोट्या-पुजारीक घर।

मैमा-जटाधारी भूतक लेल कयल जायवला नृत्य।

सीतल पाटी- चटाई।

बलीन्द्रेपाले-सप्तपर्णीक गाछ।

संदर्भ सूची-

1. सिंह डॉ. रामनारायण सिंह, अनूदित उपन्यास एनमकजे, प्रथम संस्करण-2024, प्रकाशक नवारम्भ, मधुबनी, पृ.सं.- 49
2. वएह, पृ.सं.- 52
3. सिंह डॉ. रामनारायण सिंह, अनूदित उपन्यास एनमकजे, प्रथम संस्करण-2024, प्रकाशक नवारम्भ, मधुबनी, पृ.सं.- 68
4. सिंह डॉ. रामनारायण सिंह, अनूदित उपन्यास एनमकजे, प्रथम संस्करण-2024, प्रकाशक नवारम्भ, मधुबनी, पृ.सं.- 134
5. वएह पृ.सं. 146
6. वएह पृ.सं. 214

© Copyright @ Authors